चुल्लू भर पानी में

(कविता-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

समर प्रकाशन
64-ए, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087
ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2020
ISBN : 978-93-88781-18-3
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

CHULLU BHAR PAANI ME (POETRY) Written by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,
हर उस जीव,
नदिया व शजर को
जिसकी वज़ह से यह क़ायनात
ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ
ममता, करुणा, स्नेह,
वात्सल्य और इन्सानियत
जो किसी भी मज़हब, धन दौलत
लोभ लालच और दीनो ईमान से परे हैं

अनुक्रम

अगर मैं ईश्वर होता तो	11
क्यों और कैसा फ़र्क	20
हद से गुज़र कर	27
ईश कृपा कृतज्ञ	37
प्रकृति कृपा कृतज्ञ	62
परमार्थ	83
ईश्वर कहाँ रहता है	85
विश्वास का असर	87
ईश कृपा से कृतज्ञ	90

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', सात छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख' प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्क़ारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

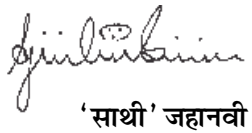

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

अगर मैं ईश्वर होता तो

भूख-प्यास

अगर मैं ईश्वर होता तो
भीषण गर्मी और
कड़ाके की ठण्ड में
भूखे प्यासे रहकर
रोजे और उपवास
करने के लिये
मैं नहीं कहता

भूखे प्यासे रहने से
अगर मैं मिलता तो
मन्दिरों, मस्जिदों, फुटपाथों,
और यतीम खानों में
करोड़ों बेबस इन्सान
भूखे-प्यासे पड़े रहते है
मगर मुझमें आस्था
और विश्वास के बिना
मुझसे मिलना नामुमक़िन है

वैसे ही बुद्ध ने भी
भूखे प्यासे रहकर
अपने तन और मन को
साधना में जर्जर करके

बहुत अधिक गलाया
फिर भी बुद्ध को
मेरी प्राप्ति नहीं हुई
जब बुद्ध ने खीर खाकर
तन मन को सन्तुष्ट करके
मेरी साधना करी
तब जाकर मेरी
ऐसी प्राप्ति हुई कि
बुद्ध से बड़ा ज्ञानी
आज दिन तक भी
इस संसार में नहीं हुआ

इसलिये भूखे प्यासे रहकर
मेरी आराधना करना
मुझमें आस्था नहीं
मूर्खता और अन्धविश्वास है
वैसे भी कर्म हीन भक्ति में
कोई भी शक्ति नहीं होती
ऐसा मेरे सभी भक्तों ने
मुझे प्राप्त करने के बाद कहा है

विलासिता

अगर मैं ईश्वर होता तो
मेरे सभी भक्तों को
विलासिता से भरपूर
छप्पन भोग और
विभिन्न प्रकार के
महँगे फल और पकवान

मुझे प्रसाद में
चढ़ाने के लिये नहीं कहता

इसके बजाय तो मैं
करोड़ों भूखे ग़रीब
और असहाय इन्सानों को
भोजन कराने के लिये कहता
ताकि मेरे तन मन को
सन्तुष्टि प्राप्त होती

दूध अभिषेक

अगर मैं ईश्वर होता तो
मेरे अभिषेक के लिये
हज़ारों लीटर दूध
और पंचामृत से स्नान
करने के लिये नहीं कहता

जहाँ पर करोड़ों बच्चे
उचित पोषण के अभाव में
कुपोषण के शिकार है
मेरे अभिषेक का दूध
अगर कुपोषित बच्चों को
पिलाया जाता तो
मुझे ज़्यादा ख़ुशी होती

समय, श्रम और धन

अगर मैं ईश्वर होता तो
मेरे शृंगार पर समय, श्रम

और धन खर्च करने के बजाय
प्रकृति, नदियों, पहाड़ों,
झीलों, समन्दर, तालाब,
झरने, बाग-बगीचे
गाँव और शहरों को
प्राकृतिक रूप से स्वच्छ,
सुन्दर और ख़ुशहाल
रखने के लिये कहता

ताकि यह कायनात
सभी जीवों में सन्तुलन से
हसीन और ख़ूबसूरत लगती
तो मैं अपने आपको
ज़्यादा ख़ूबसूरत महसूस करता

दुख और सुख

अगर मैं ईश्वर होता तो
मुझे पाने के लिये
महँगी तीर्थ यात्राओं में
समय, श्रम और धन
बर्बाद करने के लिये
बिल्कुल भी नहीं कहता

इसके बजाय धन
और समय को
अपने परिवार, माता-पिता,
भाई-बहन, रिश्तेदारों
और दोस्तों से मिलकर

उनका दुख और सुख
जानने के लिये कहता
ताकि मुझे ख़ुशी महसूस होती
वैसे भी मैं तो हर जगह पर
कण-कण में मौजूद रहता हूँ
फिर मुझे पाने के लिये
दूर दराज की कठिन
और महँगी यात्रायें क्यों

कर्म

अगर मैं ईश्वर होता तो
मुझसे मन्नतें और मुरादें
माँगने के लिये नहीं कहता
इसके बजाय तो मैं
अपने उद्देश्य के लिये
मेहनत और ईमानदारी के
रोजाना निरन्तर प्रयास से
कर्म करने के लिये कहता
ताकि मुझे ख़ुशी महसूस होती
वैसे भी कर्म हीन व्यक्तियों की
किसी भी प्रकार की इच्छायें
और मनोकामनायें पूर्ण नहीं होती

जन जागरण

अगर मैं ईश्वर होता तो
कुरूतियों और
अन्ध विश्वासों से

मेरी शोभा यात्राओं में
समय, श्रम और धन
बर्बाद करने के बजाय
जन सामान्य की चेतना हेतु
जन जागरण यात्राएं
करने के लिये कहता

ताकि समाज और देश का
भला और उद्धार होता तो
मेरी शोभा में तो वैसे ही
चार चाँद लग जाते
जिससे मुझे ख़ुशी महसूस होती

रचनात्मक कर्म

अगर मैं ईश्वर होता तो
मेरे नाम पर रीति रिवाजों की
बिना मतलब की परम्पराओं में
समय, श्रम और धन को
बर्बाद करने के बजाय
कुछ भी रचनात्मक कर्म
करने के लिये कहता

ताकि समय, श्रम और
धन का सदुपयोग होकर
समाज और ख़ुद के
मनोबल का विकास होता तो
मुझे ज़्यादा अच्छा महसूस होता

भेंट और चढ़ावा

अगर मैं ईश्वर होता तो
मुझे क़ीमती चढ़ावा और
भेंट देने के लिये नहीं कहता

इसके बजाय तो मैं
भेंट और चढ़ावे को
ग़रीबों की सहायता करने
निर्धन बच्चों को पढ़ाने
ज़रूरतमन्दों को रोजगार देने
असमर्थ को समर्थ बनाने
ग़रीब बेटियों की शादी कराने
और विभिन्न प्रकार से
समाज के विकास में
उपयोग करने के लिये कहता
तो मैं ज़्यादा साधन सम्पन्न होता
वैसे भी मैं तो सबको देने वाला हूँ
मुझे नश्वर धन और दौलत की
क्या कमी और आवश्यकता है
मैं तो सिर्फ़ और सिर्फ़
भाव और भावना का भूखा हूँ

जीव बलि

अगर मैं ईश्वर होता तो
बेचारे असहाय पशुओं
और मासूम बच्चों की
बलि देने के लिये नहीं कहता

क्योंकि सभी जीव और जन्तु

जब मेरे ही द्वारा
पैदा किये गये हैं तो
मैं असमय उनको
क्यों मारना चाहूँगा
इसलिये जब भी कोई
मुझे बलि देता है तो
वह मेरी बनाई गयी
व्यवस्था को ही तोड़ता है
इसलिये मैं किसी भी
प्रकार की बलि से
अत्यधिक नाराज हो जाता हूँ
और बलि देने वाले को
उसके बुरे कर्मों की
सजा ज़रूर देता हूँ

नर सेवा

अगर मैं ईश्वर होता तो
मेरी ख़ुदग़र्ज़ प्रार्थना में
समय और श्रम को बर्बाद
करने के लिये नहीं कहता

इसकी बजाय तो मैं
मेरी प्रार्थना के समय को
दीन दुखियों, ज़रूरतमन्दों,
ग़रीबों, असहाय बुजुर्गों की
देख भाल और सेवा में
उपयोग करने के लिये कहता
तो मैं ज़्यादा प्रसन्न होता

क्योंकि नर सेवा ही
नारायण की सेवा है
और यही मुझे प्राप्त करने का
सबसे सरल उपाय और रास्ता है

इन्सानियत

अगर मैं ईश्वर होता तो
विपरीत परिस्थितियों से
हैरान और परेशान,
ग़मगीन और ख़ौफ़ज़दा,
विचलित और मज़बूर होकर
दुखी मन से प्रार्थना
करने के लिये नहीं कहता

इसके बजाय तो मैं
तन और मन को
निर्मल और पवित्र रखने
दिल और दिमाग़ को
सहज और सरल रखने
विचारों और व्यवहारों में
सद्भावना और सहयोग
रखने के लिये कहता
ताकि यह सम्पूर्ण संसार
ईर्ष्या, नफ़रत और रंजिश में
लड़ाई और झगड़े नहीं करता
ताकि सभी जीव और जन्तु
इन्सानियत से ख़ुशहाल रहते
तो मुझे ज़्यादा ख़ुशी महसूस होती।

क्यों और कैसा फ़र्क

सम्पत्तियाँ

गैर क़ानूनी काले धन्धों के
बेईमानी के काले कारनामों से
करोड़पतियों की सम्पत्तियाँ
सरकार द्वारा जप्त हैं
और बेचारे ग़रीब के पास
सामान्य जीवन यापन के लिये भी
पर्याप्त साधन नहीं है
जब दोनों ही बेबस होकर
खर्च नहीं कर सकते
तो फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है

बीमारियों

अमीर समय और
बीमारियों की वज़ह से
कुछ खा-पी नहीं सकता
और ग़रीब के पास
कुछ खाने पीने के लिये
कुछ भी नहीं होता
जब दोनों ही बेबस होकर

खा-पी नहीं सकते
तो फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है

समय

अमीर काम की व्यस्तता में
समय की कमी की वज़ह से
साधन सम्पन्न होते हुये भी
मनोरंजन नहीं कर सकता
ग़रीब के पास समय तो है
मगर मनोरंजन के साधन नहीं हैं
तो बेचारा बेबस ग़रीब
मनोरंजन नहीं कर पाता
जब दोनों ही बेबस होकर
मनोरंजन नहीं कर सकते
तो फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है

कपड़े

अमीरों के पास आलमारियों में
इतने सारे कपड़े होते हैं कि
सारे कपड़ों को पहन नहीं पाते
कपड़े पड़े-पड़े गलकर
खराब और पुराने हो जाते हैं
फिर भी इन बेकार कपड़ों को
ज़रूरतमन्दों को नहीं देते
बेबस ग़रीब के पास
तन ढकने के लिये भी

ज़रूरी कपड़े भी नहीं होते
जब दोनों ही बेबस होकर
कपड़े नहीं पहन सकते
तो फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है

संतान

अमीर बेटों के
अमीर माता-पिता
वृद्धाश्रम में तड़प-तड़पकर
मर-मर कर जी रहे हैं
असहाय व बेबस ग़रीब
माता और पिता के
मज़बूर बेटा और बहू
पापी पेट के लिये
माता और पिता को
गाँवों में बेसहारा छोड़कर
कीड़े और मकोड़ों के तरह
जानवरों जैसा जीवन जी कर
शहरों में दिहाड़ी मज़दूरी
करने के लिये विवश हैं
जब अमीर और ग़रीब के पास
संतान का सुख नहीं है तो
फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है

संस्कारित

अमीरों के नादान

और नासमझ बच्चे
फूहड़ और अश्लील
मँहगें कपड़े पहन कर
ख़ुद अपने आपको ही
बेशर्म और बेआबरू कर रहे हैं
ग़रीबों के सुशील और
संस्कारित बच्चों के पास
तन ढकने के लिये भी
ज़रूरी फटे पुराने कपड़े
नहीं होने की वजह से
शर्मसार होकर बेआबरू हैं
जब दोनों के ही बच्चे
जब बेआबरू हैं तो
फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है

घर परिवार

अमीर व्यापारी
और अमीर पेशेवर
व्यापार और नौकरी की
व्यस्तताओं की वजह से
अपने दिन और रातें
यात्राओं और होटलों में
बेबस होकर गुज़ारते हैं
इन अमीर इन्सानों के
ख़ूबसूरत आलिशान बंगले
शमशान की तरह से
सुनसान भूत बंगले बनकर

सूने और खाली पड़े रहते हैं
ग़रीब मेहनत मज़दूरी के लिये
घर और परिवार छोड़कर
शहरों के फुटपाथ पर
विवशता में अपनी
गुज़र बसर करते हैं
जब दोनों के ही पास
घर की सुख सुविधायें
और आराम नहीं हैं तो
फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है

ज्ञान

अमीरों के पास
किताबें पढ़कर
ज्ञान प्राप्त करने
कुछ सीखने और करने के लिये
वक़्त नहीं है
ग़रीब के पास
वक़्त है तो
कुछ पढ़कर सीखने
और ज्ञान प्राप्त कर
कुछ करने के लिये
सामान्य किताबें भी नहीं है
जब दोनों के ही पास
ज्ञान नहीं है तो
फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है

इलाज

अमीर महँगा और विदेशी
इलाज करवा कर
महँगी जीवन रक्षक दवाइयाँ
खाकर भी मर रहे हैं
असहाय ग़रीब
सामान्य इलाज भी
नहीं करवा पाने
और सस्ती दवाइयाँ
नहीं खरीद पाने से मर रहे हैं
जब दोनों ही मर रहे हैं तो
फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है

रिश्ते

साधन सम्पन्न होते हुये भी
अमीरों के पास
ख़ून के रिश्ते
निभाने के लिये भी
वक़्त नहीं है
तो ख़ून के रिश्ते भी
अहसास और जज़्बातों के बिना
अकाल मौत मर रहे हैं
ग़रीबों के पास वक़्त है तो
रिश्ते निभाने के लिये
उचित और पर्याप्त साधन
नहीं होने की वजह से

ख़ून के रिश्ते भी
बेबस होकर बेमौत मर रहे हैं
जब दोनों के ही
रिश्ते मर रहे हैं तो
फिर अमीर और ग़रीब में
क्यों और कैसा फ़र्क है।

हद से गुज़र कर

पानी

जीवन रक्षक पानी के बिना
जीव और जन्तुओं का
जीवन मुमक़िन नहीं
जो पानी जीवन के लिये
अमृत की तरह से
इतना अति आवश्यक है
वही शान्त और निर्मल पानी
अपने हद से गुज़र कर
तूफ़ान के रूप में
जान माल की तबाही से
जीवन का विनाशकारी हो जाता है

मोह

माना कि परिवार
एक मुखिया के लिये
नैतिक ज़िम्मेदारी है
जब परिवार से मोह
हद से ज़्यादा हो जाता है
तो अपना परिवार ही
सब कुछ लगने लगता है
फिर इन्सान अपने रिश्तों

दोस्तों, रिश्तेदारों और
समाज से कट जाता है
इन्सान परिवार मोह में
ख़ुदग़र्ज़ और मतलबी होकर
समाज रूपी वट वृक्ष को
अपने हाथों से ही उजाड़ देता है

धरती

सम्पूर्ण जगत को
सब कुछ देने वाली
साधन और सम्पन्न
सहनशील धरती माता
अत्यधिक दौहन और खनन से
ममतामयी धरती माता का
सीना छलनी और ज़ख्मी
तन और मन से बेबस
गुस्से और नाराजगी में
बदन और लहू का लावा बनकर
ज्वालामुखी और भूकम्प के रूप में
अपनी हद से गुज़र कर
विनाशकारी हो जाती है

हवा

प्राणदायक हवा के बिना
समस्त जीव जन्तुओं का
जीवन मुश्क़िल ही नहीं
पल भर जीना भी नामुमक़िन है

हवा आँधी तूफ़ान के रूप में
अपनी हद से गुज़र कर
समस्त जीव जन्तुओं के
जीवन को ख़त्म कर देती है

खर्च

विलासता की जीवन शैली में
आय से अधिक खर्च
जब हद से गुज़र जाता है तो
बेबस होकर के इन्सान
उधारी के चक्रव्यूह में फँसकर
कर्ज़ की ज़ंजीरों में जकड़कर
तौहीन और ज़लालत से
ख़ुदकुशी को गले लगा लेता है

सन्तान मोह

पुत्रों और पुत्रियों को
संस्कार, प्यार और सुरक्षा देना
माता और पिता के लिये
एक नैतिक ज़िम्मेदारी है
जब प्यार और सुरक्षा
हद से गुज़र जाती है तो
सन्तान मोह में बदल जाती है
फिर नालायक सन्तानों के
अवगुण और बुरे कर्म भी
माता-पिता को नज़र नहीं आते
इसलिये ऐसी नालायक
सन्तानों की वज़ह से

माता और पिता का नाम
रोशन होने के बज़ाय
अपमान और शर्म से
समाज में बदनाम होकर
मिट्टी में मिल जाता है

ख़ुशियाँ

ख़ुशियाँ, उत्साह और उमंग
जब हद से गुज़र जाती है तो
मौज मस्ती में मस्त
और बेख़बर होकर
अचानक कोई न कोई
अनहोनी हो ही जाती है
फिर ख़ुशियाँ और उमंग
मातम में बदल जाती है

बुद्धि

जब इन्सान में बुद्धिमानी
हद से गुज़र जाती है तो
विनाशकाले विपरीत बुद्धि
घमण्ड़ और सनक बनकर
मूर्खता में बदल कर
इन्सान का पतन कर देती है

कला

कलाकार में कला
मेहतन और ईमानदारी के
हर रोज निरन्तर रियाज़ से

कला निखरती और सँवरती है
और अपने इल्म और हुनर से
समाज में सम्मान पाती है
जब कलाकार में कला से
दौलत और शौहरत
हद से गुज़र जाती है तो
अपने इल्म और हुनर के
मान और अभिमान से
ख़ुद में मगरूर होकर
गुरूर में बदल जाती है तो
कला कलाकार से
दूर होकर समाप्त हो जाती है
जिससे कलाकार का
मान सम्मान ख़त्म हो जाता है

कामयाबी

बिना मेहनत
और ईमानदारी के
सिर्फ़ और सिर्फ़
क़िस्मत से मिली
बिना इल्म और साधनों के
काम चलाऊ और झूठी कामयाबी
हद से गुज़र कर इन्सान को
आसमान से ज़मीन पर पटककर
तौहीन और ज़लालत में
ज़रूरत के वक़्त पर
झूठी कामयाबी इन्सान को
अपना असली चेहरा दिखा देती है

जोशो जुनून

बिना सोच और विचार के
खतरों के खिलाड़ी बनने में
बिना हुनर और रियाज़ के
नामुमक़िन को मुमक़िन करने में
अनाड़ी का जोश और जुनून
जब हद से गुज़र जाता है तो
ख़ुद अपने आपके लिये
मुसीबत को मोल लेकर
मौत को गले लगाना पड़ता है

सच

साँच को आँच नहीं
जब सच के सुबूतों को
हद से गुज़र कर
चीख चीखकर सुबूतों को
दिल की अदालत में
सच को सुनाया
और पेश किया जाता है तो
सच झूठ के जैसा लगता है
क्योंकि दिल का न्यायधीश
आस्था और विश्वास में
अन्धा और बहरा होता है
दिल तो सिर्फ़ और सिर्फ़
बेज़ुबान सच्चे मौन की
ख़ामोश ज़ुबान सुनकर
सच्चे मौन की शक्ति का
तन मन में अहसास करता है

बचत

वैसे तो बचत करना
इन्सान की अच्छी आदत है
इन्सान के बुरे वक़्त में
जब भीख माँगने से भी
कोई भी सहायता नहीं करता
तब अपनी बचत ही
बुरे वक़्त में काम आती है
मगर सख़्त ज़रूरत के लिये भी
बिल्कुल भी खर्च नहीं करके
धन दौलत जमा करने की आदत
जब हद से गुज़र जाती है तो
इन्सान को कंजूस बनाकर
धनवान होकर भी इन्सान को
कंजूसी की आदत ग़रीब बनाकर
कंगाल और दरिद्र का जीवन
जीने के लिये विवश कर देती है

जीवन शैली

इन्सान के रहन-सहन
खान-पान की जीवन शैली
अपनी हद से गुज़र कर
प्रकृति के स्वाभाविक नियमों के
विपरित हो जाती हैं तो
इन्सान बहुत सारी लाइलाज
बीमारियों से ग्रसित होकर
हर रोज मर-मर कर
जीने के लिये विवश होते हैं

शासन

शासन और प्रबन्ध व्यवस्था
जब अपने निजी स्वार्थ
परिवारवाद, भाई-भतीजावाद,
जातिवाद और धर्मवाद में
जब जुल्म और सितम करके
हद से गुज़र जाती है तो
शासन और प्रबन्ध व्यवस्था
तानाशाही हो जाती है
जो बेबस जनता के आक्रोश से
अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध
असहाय जनता के जन आन्दोलन से
ऐसी शासन व्यवस्था
जनता के तख़्ता पलट से
तानाशाही ख़त्म हो जाती है

लाभ

जब व्यापार का उचित लाभ
लोभ और लालच में
दीन और ईमान के बिना
अपने हद से गुज़र कर
अवैधानिक और अनैतिकता से
मुनाफाखोर हो जाता है तो
वर्षों से चलता हुआ व्यापार भी
अपने बरसों पुराने
ग्राहकों के अविश्वास से
व्यापार का पतन होकर
व्यापार ख़त्म हो जाता है

प्रार्थना

जब ईश्वर की प्रार्थना
अपने स्वार्थ की कामनाओं
और मनोकामनाओं में
हद से गुज़र जाती है तो
प्रार्थना ख़ुदग़र्ज़ होकर
अन्ध विश्वास में बदल जाती है
जिससे इन्सान का
नैतिक पतन हो जाता है

मीठा

जब पकवानों में मीठा
हद से ज़्यादा हो जाता है तो
मिठाइयों का स्वाद
कसैला और कड़वा हो जाता है
उसी प्रकार चापलूसी में
विनम्रता अपने हद से
जब गुज़र जाती है तो
विनम्रता चालाकी और मक्कारी से
ख़ुदग़र्ज़ी में बदल जाती है

आराम

नियमित और उचित आराम
अपने तन और मन
दिल और दिमाग़ को
तरो ताजा रखने के लिये
हर रोज अतिआवश्यक है

ताकि शरीर सुचारू रूप से
नियमित काम करता रहे
जब आराम हद से गुज़र कर
हराम हो जाता है तो
इन्सान निकम्मा, आलसी,
कामचोर और मक्कार हो जाता है।

ईश कृपा कृतज्ञ

अंग

कोई अँधा है
कोई गूंगा है
कोई बहरा है
कोई हाथ से अपंग है
कोई पैर से अपंग है
कोई दिमागी असंतुलन से
क्रोधी और पागल है

जब मैं इन सब
तन और मन से अपाहिजों को
अक़्सर हर रोज देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
भले ही मेरे शरीर के
सारे के सारे अंग
इतने हष्ट-पुष्ट
और समर्थ नहीं है

फिर भी मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे सम्पूर्ण शरीर के
सारे अंग सही सलामत
और विशेष रोगों से मुक्त हैं
और मेरे शरीर के सभी अंग
सुचारू रूप से काम करते हैं

बीमारी

मेरा रहन-सहन
और खान पान
स्वास्थय के दृष्टिकोण से
उचित और पर्याप्त नहीं हैं
मगर बहुत सारे
ऐसे इन्सानों को
जिनका खान-पान
और रहन सहन
स्वास्थय के दृष्टिकोण से
पर्याप्त और उचित है

फिर भी उनको
बहुत सारी
लाइलाज बीमारियों से
रोग ग्रस्त होकर
मरने के लिये बेहाल होकर
तड़पता हुआ
अक़्सर हर रोज देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ

और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि
मुझे कोई भी ऐसी
लाइलाज बीमारी नहीं है
जिससे मेरा जीना
मुश्क़िल हो जाये

रोटी

बहुत सारे जर्जर ग़रीबों
और बूढ़े बेसहारा इन्सानों
और बेबस मासूम बच्चों को
भूख से बेहाल होकर
मर-मरकर ज़िन्दा रहने के लिये
सड़ी, गली, बासी, झूठी
रूखी सूखी रोटी के लिये
जलील और मज़बूर होकर
दर-दर भटक कर
भीख माँगते हुये
अक़्सर हर रोज देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मुझे कम से कम
दो वक़्त की रोटी तो
मेहनत और ईमानदारी की

मेरी जायज़ कमाई से
मान-सम्मान से नसीब है
भले ही रूखी-सूखी ही सही

मकान

जब मैं बहुत सारे
मज़बूर इन्सानों को
सड़कों, फुटपाथों पर
लावारिश जानवर जैसा,
गन्दी कच्ची बस्तियों में
कीड़े मकोड़ों की तरह
नर्क से भी बदतर जीवन
जीते हुये अक़्सर
हर रोज देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे पास सर ढकने के लिये
कम से कम एक
सस्ता और साधारण
छोटा सा मकान तो है
जिसमें सामान्य
जीवन जीने के लिये
ज़रूरत की सभी सुविधायें हैं

रोजगार

बहुत सारे मज़बूर
आर्थिक रूप से कमजोर
बेरोजगार इन्सानों को
हताशा और निराशा में
हैरान और परेशान होकर
साधारण और सामान्य
जीवन जीने के लिये भी
मेहनत ओर मज़दूरी करके
ख़ून और पसीना बहाकर
संघर्ष करते हुये
मैं अक्सर
हर रोज देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे पास कम से कम
संतुष्ट और ख़ुश रहकर
साधारण जीवन
जीने के लिये
स्थाई आय और रोजगार का
निश्चित साधन तो है
भले ही रोजगार से
मेरी ज़्यादा आमदनी नहीं है

वस्त्र

बहुत सारे ग़रीब
स्त्री और पुरूष,
बेबस और बदहाल
मासूम बच्चों को
तन से बेआबरू होकर
निर्वस्त्र या फटे पुराने
जर्जर कपड़ों में
अक्सर देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे पास
तन ढकने के लिये
कम से कम साधारण
और ज़रूरत के
सस्ते कपड़े तो हैं
भले ही मेरे पास
ज़्यादा मात्रा में न सही

पानी

जब जल के बिना
जीवन मुमक़िन नहीं
तब बहुत सारे
मज़बूर इन्सानों को

पानी की अति आवश्यक
साधारण ज़रूरतों को
पूरा करने के लिये
थोड़े से गन्दे और बदबूदार
पानी के लिये भी
बेबस होकर तरसते हुये
लड़ाई झगड़े करके
ख़ून बहाते हुये
मैं अक़्सर हर रोज देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे पास कम से कम
साधारण ज़रूरतों को
पूरा करने के लिये
साफ़ और स्वच्छ पानी
पर्याप्त मात्रा में तो है

क़र्ज़

बहुत सारे ऐसे बेबस इन्सानों को
दिखावटी और बनावटी
विलासिता का जीवन जीकर
अधिक ब्याज दर पर
हैसियत से ज़्यादा क़र्ज़ लेकर
आय से अधिक खर्च करके

किस्तों की जंजीरों में जकड़कर
क़र्ज़ के दल-दल में फँसकर
आर्थिक रूप से बदहाल होकर
समाज के सामने तौहीन
और ज़लालत सहन करके
ख़ुदकुशी करते हुये
मैं अक़्सर देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मैं मान और सम्मान से
संतोषी का जीवन जीकर
आय से कम खर्च करके
उचित रहन सहन से
बुरे वक़्त के लिये बचत करके
किसी भी प्रकार के
सस्ते क़र्ज़ से भी मुक्त तो हूँ।

संतान

बहुत सारे ऐसे बेबस
और बदकिस्मत इन्सानों को
जिन्होंने किसी बीमारी,
और दुर्घटना की वजह से
अपने छोटे-छोटे मासूम
संतानों को खो दिया है

या फिर किसी कारणवश
दुर्भाग्य से बच्चे
पैदा नहीं होने की वजह से
निसंतान रह गये है

जो एकाकी जीवन
जीने के लिये मज़बूर हैं
जिनके घर और आँगन
श्मशान के जैसे
सूने और सुनसान हैं
जिसमें ख़ौफ़ज़दा होकर
हर पल मर-मरकर
जीने के लिये विवश हैं

और मासूम बच्चों की
किलकारी, चहल-पहल,
हँसी-मजाक, खेलकूद
और शरारत से वंचित होकर
संतान सुख के लिये
तड़पते और तरसते हैं
भले ही संतान अपंग,
अपाहिज, नालायक और
मानसिक रूप से विकृत
और कमज़ोर ही क्यों न हो

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरा घर बच्चों की
चहल-पहल और शरारतों से
रोशन और आबाद तो है
और मेरे पास कम से कम
दुख और सुख में
वक़्त और बेवक़्त
ज़रूरत होने पर
साथ देने के लिये
अच्छी-बुरी सन्तान तो है

दोस्त और रिश्तेदार

बहुत सारे ऐसे बेबस
और बदकिस्मत इन्सानों को
बिना दोस्त और रिश्तेदारों के
बिना हँसी और मजाक के
बिना सहयोग और सद्भावना के
बिना दुख और सुख में साथ के
ख़ुदग़र्ज़ एकाकी जीवन जीकर
मुसीबत के बुरे वक़्त में
हैरान, परेशान,हताश,
निराश, ग़मगीन, बदहाल
और दुखी होता हुआ
मैं हर रोज अक़्सर देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे पास कम से कम
हँसी-मजाक के लिये
मुसीबत के बुरे वक़्त में
अपनी क्षमता के अनुसार,
दुख और सुख में
यथा योग्य साथ देने
और सहयोग करने के लिये
अच्छे बुरे दोस्त और रिश्तेदार तो हैं।

साधन और आय

बहुत सारे ऐसे बेबस
और बदकिस्मत इन्सानों को
जो बहुत बेहिसाब
नाजायज़ कमाई करके
सांसारिक मोहमाया में जकड़कर

धन संग्रह करने की प्रवृति में
कंजूस का जीवन जीकर
अपने चैन और सुक़ून खोकर
एक दिन सब कुछ यहीं छोड़कर
अतृप्त कामनायें साथ लेकर
अक़्सर हर रोज मरते हुए देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे पास कम से कम
चैन और सुक़ून से
मान और सम्मान से
तन मन से संतुष्ट होकर
मोहमाया से दूर रह कर
मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होकर
साधारण जीवन जीने के लिये
मेरे पास ज़रूरत की
सभी सामान्य और साधारण
आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये
मेहनत और ईमानदारी से
पर्याप्त साधन और आय तो है

कार

बहुत सारे ऐसे बेबस
और लाचार इन्सानों को
जब अक़्सर पैदल, साईकिल,
और दोपहिया वाहन पर
या फिर बेकार से
सार्वजनिक वाहनों पर
सर्दी, गर्मी, बरसात
और धूप की असुविधाजनक
और विपरीत परिस्तिथियों में
तन मन से परेशान होते हुये
मैं हर रोज अक़्सर देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ

और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे पास कम से कम
'बाईस' वर्ष पुरानी
बिना 'ए.सी.' की मारूती-800
सामान्य कार तो है
जिसमें मुझे अकेले,
परिवार और मित्रों सहित
साथ आने जाने में
सर्दी, गर्मी, बरसात
और धूप की असुविधा से
बचाव तो हो जाता है
जिससे मेरा सफ़र
आरामदायक हो जाता है

नशा

बहुत सारे ऐसे बेबस
और एकाकी इन्सानों को
शारीरिक, मानसिक, सामाजिक,
पारिवारिक, धार्मिक, आर्थिक,
दुख, दर्द और ग़मों को
तन-मन से भुलाने के लिये
किसी भी नशे का सेवन कर
हैरान और परेशान होकर

या फिर ख़ुशियों के जश्न को
बेहिसाब महँगी शराब पीकर

अपना तन, मन, धन और
दिलो दिमाग़ को तबाह करते हुये
मैं अक़्सर हर रोज देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मैं मानसिक, शारीरिक,
आर्थिक, सामाजिक,
पारिवारिक, आध्यात्मिक
और धार्मिक चेतना के विकास से
और नज़दीकी सम्बन्धियों,
और गहरे दोस्तों के साथ
विचार-विमर्श, सहयोग
और सद्भावनाओं के विचार से

समझदार, सहज, सरल
और निर्मल होकर के
किसी भी प्रकार की
हैरानी और परेशानी
और कष्ट सहन कर
किसी भी प्रकार के
नशे से मुक्त होकर
धार्मिक, आध्यात्मिक,
आर्थिक, सामाजिक,
पारिवारिक, शारीरिक

और मानसिक रूप से
प्रसन्नचित और ख़ुशहाल हूँ

बेटी

बहुत सारे ऐसे बेबस
और बदनसीब इन्सानों ने
बेटों की चाहत, तमन्ना,
ख़्वाहिश, अभिलाषा, कामना
और मनोकामनाओं में
बेटियों की गर्भ में ही
बेरहमी से भ्रूण हत्यायें कर
परिवार और समाज में
आधे रिश्तों को ख़त्म कर
ख़ुशहाल घर और आँगन को
मासूम और चंचल बेटियों की
महकती रौनक और रोशनी से
वंचित करके तबाह कर दिया

बेटियों की निर्मम
और ज़बरन हत्याओं से
भाई और बहन के
निर्मल और पवित्र रिश्ते
और बचपन की मासूम
शरारतों का गला घोंट कर
मासूम बेटों और बेटियों का
निर्मल बचपन तबाह कर दिया
अब रक्षा बंधन के
पावन त्यौहार पर

सूनी कलाइयों को देखकर,
या फिर उम्र दराज कुँआरे
लायक बेटों के लिये भी
ग़रीब, अनपढ़ बदसूरत,
कामचलाऊ बहुओं की तलाश में

दोस्तों और रिश्तेदारों से
बार-बार विनम्र अनुरोध कर
समाज में ज़लील होकर
दर-दर बेहाल भटक कर
हैरान और परेशान होकर
अफसोस और मलाल में
तन मन से दुखी होते हुये
मैं अक़्सर हर रोज देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरा घर एक बेटे के साथ
दो बेटियों की रौनक,
चहल-पहल, शरारतों
और ख़ुशहाली से आबाद होकर
प्राकृतिक, पारिवारिक
और सामाजिक रिश्तों में
समन्वय, सामंजस्य
और संतुलन रखकर

दिल और दिमाग़ के साथ
तन और मन से प्रसन्नचित है

जीवन साथी

बहुत सारे ऐसे बेबस
और बदनसीब इन्सानों ने
जिन्होंने दुर्भाग्यवश
किसी आकस्मिक दुर्घटना
और बीमारी की वजह से
अपना जीवन साथी खो दिया है
या मतभेद की वजह से
जिनका तलाक हो गया है
या फिर मनमुटाव की वजह से
अलग-अलग रहने को मज़बूर है

उनको बेरहम तन्हाई
और जुदाई में बेबस होकर
एकांत का जीवन जीकर
दाम्पत्य जीवन के सुख से
वंचित और परेशान होकर
पारिवारिक गृहस्थ जीवन में
असुविधाओं का सामना कर
हताश और निराश होकर
तन और मन से दुखी होकर
मैं अक़्सर हर रोज देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ

और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरा पारिवारिक गृहस्थ जीवन
दाम्पत्य जीवन के सभी
सुख और सुविधाओं की
ख़ुशहाली से आबाद तो है
भले ही मेरा जीवन साथी से
वैचारिक मतभेद, मनमुटाव
और मामूली नोंक जोंक
हर रोज ही क्यों न सही

पड़ोसी

बहुत सारे ऐसे बेबस, एकाकी
और बदनसीब इन्सानों को
पड़ोसियों से मधुर रिश्ते
नहीं होने की वजह से
ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत में जीकर
मुसीबत के बुरे वक़्त में
बिना सहयोग और सहायता के
हैरान और परेशान होकर
मैं हर रोज अक़्सर देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे सभी पड़ोसियों से
सहयोग, सहायता, सद्विचार
और सद्भावना के मधुर रिश्ते हैं
हम सब हिल-मिलकर
और मिल जुलकर रहते हैं
हम सभी पड़ोसी आपस में
एक दूसरे के त्यौहार
बिना किसी जाति, धार्मिक
और आर्थिक भेदभाव के
उत्साह और उमंग से मनाते हैं
एक दूसरे के सुख दुख में
यथा योग्य मदद करते हैं
और आपस में ख़ुशहाली से रहते हैं

वैसे भी पड़ोसी ही
सबसे बढ़ा रिश्तेदार होता है
क्योंकि बुरे वक़्त की मुसीबत में
ज़रूरत के वक़्त पर
सबसे पहले पड़ोसी ही
वक़्त पर काम आता है।

भाई बहन

बहुत सारे ऐसे बेबस
और बदनसीब इन्सान
जिनका अपने भाइयों,
बहनों और सम्बन्धियों में
धन और सम्पत्तियों को लेकर
पारिवारिक और सामाजिक

विवाद होने की वजह से
ईर्ष्या, रंजिश और नफ़रत का
एक दूसरे से व्यवहार करके
हैरान, परेशान, दुखी, ग़मगीन
और ख़ौफ़ज़दा रहकर
अपना चैनो सुकून ख़त्म करके
मैं हर रोज अक़्सर देखता हूँ

तो ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

कम से कम मेरा भाइयों,
बहनों और सम्बन्धियों से
किसी भी प्रकार का विवाद
नहीं होने की वजह से
मेरे सबसे मधुर रिश्ते हैं
और हम सब हिल-मिलकर
चैन और सुकून से रहते हैं

भले ही मेरे भाईयों, बहनों
रिश्तेदारों और सम्बन्धियों से
मामूली मनमुटाव और विचारों में
मतभेद की क्यों न सही
मगर मुसीबत के बुरे वक़्त में
हम सब आपस में
एक दूसरे के काम आते हैं

और एक दूसरे की यथा योग्य
सहायता और सहयोग करके
भाईचारे की ख़ुशहाली से रहते हैं

माता-पिता

बहुत सारे ऐसे बेबस
और बदनसीब इन्सानों को
जो मज़बूरी में रोजगार
या व्यापार की वजह से
या फिर भाई-भाई, सास-बहू,
ननद-भाभी, देवरानी-जेठानी में
लड़ाई-झगड़े, मतभेद
और मन मुटाव की वजह से
अपने माता-पिता से दूर
या अलग-अलग रहकर
माता-पिता के आशीर्वाद
और उनके सारे जीवन के
समग्र अनुभव से सलाह
और विचार-विमर्श से वंचित होकर
हैरान और परेशान होकर
असुविधा, दुख और कष्टों में
जीवन-यापन करते हुये
मैं हर रोज अक़्सर देखता हूँ

तो ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मेरे संयुक्त परिवार में
माता-पिता का आशीर्वाद
सभी परिजनों का सहयोग,
विश्वास, विचार-विमर्श
और आपस में प्यार तो है
भले ही परिजनों में
मामूली मनमुटाव, मतभेद
और साधारण नोंक-झोंक ही
आपस में क्यों न सही

गुरु

बहुत सारे ऐसे बेबस
और बदनसीब इन्सानों को
बिना गुरू के ज्ञान, अनुभव
सोच समझ से हताश,
निराश, हैरान परेशान होकर
अपनी जिज्ञासा शांत करने,
अपने दिल और दिमाग़ को
सहज-सरल, निर्मल-पवित्र,
सहनशीलता, सद्कर्म, सद्विचार,
विनम्रता, मानसिक शांति
और शारीरिक विकास के लिये
तन-मन से दर-दर भटक कर
मैं हर रोज अक्सर देखता हूँ

तो ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि

गुरुओं के ज्ञान,
अनुभव, सोच समझ से
मेरा तन और मन
सहज, सरल, निर्मल,
पवित्र, सहनशील, सद्कर्म
और सद्विचारों से परिपूर्ण होकर
मैं सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक,
राजनैतिक और आर्थिक रूप से
विकसित और समृद्ध तो हूँ

मनुष्य योनी

जो जीव और जन्तु
इन्सानों के सम्पर्क से
दूर जंगलों में रहते हैं
वो जीव जन्तु भले ही
अपने संसार में ज़रूर
मस्त और ख़ुशहाल रहते हो
क्योंकि जंगल में ही तो मंगल है

मगर बहुत सारे
बेबस और बदनसीब
ऐसे जीव जन्तुओं को
जो इन्सानों जैसी सोच,
समझ, दिमाग़, बदन
और जुबान नहीं रखते हैं
जो अपनी भूख-प्यास के लिये
अपने मालिकों की क़ैद में रहकर
उनकी दया और मेहरबानी पर

ज़िन्दा रहने के लिये विवश हैं
जो अपने मालिकों के हुक्म से
गुलाम रहने को मज़बूर होकर
जुल्म और सितम सहते हैं

या फिर ऐसे बेबस
और बदनसीब
जीव और जन्तु
भूख प्यास के लिये
दर-दर भटकते हुये
लावारिस जानवर
जिन्हें इन्सान ग़लत
और बुरी नज़र से देखकर
बुरा और घटिया
व्यवहार करते हुये
मैं हर रोज अक़्सर देखता हूँ

तो मैं ईश्वर के प्रति
कृपा से कृतज्ञ होता हूँ
और मैं ईश्वर को
धन्यवाद देता हूँ कि

मुझे ईश्वर ने इस प्रकृति की
सबसे अक्लमंद, समझदार,
शारीरिक और मानसिक रूप से
हर तरह से योग्य और समर्थ,
सभ्य, सुसंस्कृत, संस्कारी,
ख़ूबसूरत, हसीन और जहीन
मनुष्य योनी प्रदान की है

जो सभी जीव जन्तुओं में
शारीरिक और मानसिक रूप से
श्रेष्ठ ही नहीं सर्वश्रेष्ठ है
जिसे पाने के लिये
ख़ुद ईश्वर और देवता भी
अभिलाषा में तरसते रहते हैं

इसलिये ईश्वर भी
कभी-कभी मनुष्य योनी में
जन्म और अवतार लेकर
अपनी हार्दिक अभिलाषा को
पृथ्वी लोक में पूर्ण करते हैं

सिर्फ़ मनुष्य योनी में ही
सद्कर्मो से मोक्ष की
प्राप्ति की जा सकती है
मनुष्य योनी में ही
भूत, भविष्य
और वर्तमान के
अच्छा बुरा सोचने
और समझने की क्षमता होती है।

प्रकृति कृपा कृतज्ञ

सूर्य देव

बिना किसी धार्मिक भावना के
सारे जगत के पालनहार
सूर्य देव को जल चढ़ाकर
शीतलता प्रदान करके
कृतज्ञ होकर आराधना
इस आस्था और विश्वास से
मैं इसलिये करता हूँ कि
तुम मुझे बिना किसी धर्म
और बिना किसी जाति
बिना किसी लोभ-लालच
बिना किसी प्रतिफल के
और बिना किसी भेदभाव के
उष्मा, ऊर्जा और प्रकाश देते हो

बिना ऊर्जा और प्रकाश के
जीवन में गति नहीं होती है
जब जीवन में गति नहीं हो तो
समस्त जीव जन्तुओं का जीवन
ज़िन्दा मुर्दे के समान है
बिना प्रकाश के जीवन से भी
संसार में स्थिरता का अन्धकार है

बिना ऊर्जा और उष्मा के
पानी का वाष्पीकरण नहीं
जब वाष्पीकरण नहीं तो
आसमान में बादलों से
पानी की बारिश भी नहीं
जब बारिश नहीं हो तो
नदियों, झीलों, कुओं
और तालाबों में पानी नहीं
जब पानी नहीं हो तो
बिना पानी के जीवों का
जीवन भी मुमक़िन नहीं
क्योंकि पानी नहीं हो तो
फसलें और पेड़ भी नहीं
फसलें और पेड़ नहीं हो तो
अन्न, फल और वायु भी नहीं

अन्न और वायु के बिना
जीव और जन्तुओं का
जीना भी मुमक़िन नहीं
जब जीना मुमक़िन नहीं है
तो फिर बहुत आसानी से
बेरहम और बदहाल मौत मुमक़िन है

इसलिये सूर्य की उपासना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही सूर्य की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से

सूर्य की उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! सूर्य देव
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं तन मन से कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो-दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

चन्द्र देव

बिना किसी
धार्मिक भावना के
हे! चन्द्र देव
मैं इसलिये तुम्हारा
अहसानमन्द होकर
आराधना करता हूँ कि
तुम मुझे बिना किसी जाति
बिना किसी धार्मिक भेदभाव
बिना अमीरी और ग़रीबी के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी लोभ-लालच के
भयानक अन्धेरी काली रातों में
ऐसी शीतल रोशनी देते हो कि
लाखों चराग़ जलाने के बाद भी

ऐसी रोशनी का प्रकाश
मुमक़िन नहीं हो सकता
ताकि विपरीत परिस्थितियों में
वक़्त बेवक़्त ज़रूरत होने पर
महत्वपूर्ण और अतिआवश्यक कार्य
अन्धेरी काली रातों में भी
सहजता और सरलता के साथ
आसानी से सम्पन्न हो जाये

इसलिये चन्द्रमा की आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही चन्द्रमा की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
चन्द्रमा की उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! चन्द्र देव
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

ब्रह्माण्ड

बिना किसी
धार्मिक भावनाओं के
ब्रह्माण्ड की आराधना
मैं इस आस्था
और विश्वास के
साथ करता हूँ कि
ईश्वर एक ही है
जो ब्रह्माण्ड में रहता है
क्योंकि दुआओं के लिये
सबके हाथ ऊपर ही उठते हैं
भले ही हमारे धर्म और विचार
अलग-अलग ही क्यों न हो

परमपिता परमेश्वर ही
इस सम्पूर्ण सृष्टि का
रखवाला और पालनहार है
ईश्वर सब जीव जन्तुओं को
उनके कर्मों के अनुसार
बिना किसी धार्मिक भेदभाव के
सबको यथा योग्य फल देता है
जिसके लिये जीव जन्तु योग्य हैं
इसलिये प्राणी मात्र के लिये
बिना किसी धार्मिक भावना के
कर्म ही ईश्वर की पूजा है

अनन्त ब्रह्माण्ड में ही
तारे-सितारे, चाँद-सूरज

और अन्य ग्रह-नक्षत्र
अन्तरिक्ष में विद्धमान है
जो निरन्तर गतिशीलता
अपनी उपयोगिता और अहमियत से
पृथ्वी और प्रकृति को
सुरक्षित और सन्तुलित रखते हैं

इसलिये ब्रह्माण्ड की आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही ईश्वर की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
ईश्वर की उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! ब्रह्माण्ड
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

धन की देवी

बिना किसी धार्मिक भावना के
धन की देवी और देवताओं की

अहसानमन्द होकर
आराधना इसलिये करता हूँ कि
तुम मुझे बिना किसी जाति
बिना किसी धार्मिक भेदभाव
बिना अमीरी और ग़रीबी के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी लोभ लालच के
पुरुषार्थ का प्रतिफल देते हो
और यथा योग्य कर्म करे बिना
धन की प्राप्ति नहीं हो सकती

धन दौलत भगवान तो नहीं है
मगर भगवान से कम भी नहीं है
इसलिये प्राणी मात्र के लिये
धन की उपयोगिता और अहमियत से
बिना किसी धार्मिक भावना के
पुरुषार्थ की आराधना ही
प्रतिफल और पुरूस्कार है धन का

इसलिये धन की देवी
और देवता की प्रार्थना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही धन की देवी की
और देवता की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
धन की देवी की
और देवता की

उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे!
धन की देवी
और देवता
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

ज्ञान की देवी

बिना किसी धार्मिक भावना के
ज्ञान की देवी और देवताओं
मैं इसलिये तुम्हारा
अहसानमन्द होकर
आराधना करता हूँ कि
तुम मुझे बिना किसी जाति
बिना किसी धार्मिक भेदभाव
बिना अमीरी और ग़रीबी के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी लोभ लालच के
उत्सुकता और जिज्ञासा में
कुछ सीखने की लगन,

मेहनत और ईमानदारी से
तन और मन की साधना में
ज्ञान के रूप में प्रतिफल देते हो

ज्ञान ही वो अमूल्य धन है
जो न कभी नष्ट होता है
और न ही चोरी हो सकता है
ज्ञान से ही इन्सान की
सामाजिक प्रतिष्ठा, आदर सत्कार
और मान सम्मान में वृद्धि होती है

इसलिये प्राणी मात्र के लिये
बिना किसी धार्मिक भावना के
कुछ सीखने की लगन,
उत्सुकता और जिज्ञासा ही
ज्ञान प्राप्त करने का
एक मात्र सरल मार्ग है

इसलिये ज्ञान की देवी
और देवता की प्रार्थना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही ज्ञान की देवी
और देवता की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
ज्ञान की देवी
और देवता की उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे!
ज्ञान की देवी
और देवताओं की
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

धरती माँ

बिना किसी धार्मिक भावना के
सम्पूर्ण जगत के समस्त जीव
और जन्तुओं की पालनहार
धरती माँ की आराधना
मैं इसलिये करता हूँ कि
तुम मुझे बिना किसी जाति
बिना किसी धार्मिक भेदभाव
बिना अमीरी और ग़रीबी के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी लोभ लालच के
सभी जीव और जन्तुओं को
अन्न और फलों के रूप में
भोजन और आश्रय देती हो
ताकि सभी जीव जन्तुओं का
जीवन ख़ुशहाल हो सके

भले ही नालायक सन्तानें
धरती माँ के साधनों का
अत्यधिक दोहन और शोषण से
तन और मन को जख़्मी करके
कितना ही बुरा व्यवहार करती हो

धरती माँ तो वैसे ही
इतनी समझदार, सहनशील,
और संवेदनशील होती है कि
जो गर्मी में अपने भूगर्भ से
अमृत जैसा शीतल जल देती है
और सर्दी में अपने भूगर्भ से
अनुकूल गर्म पानी देकर
अपनी सन्तानों की दिनचर्या को
मौसम और प्रकृति के अनुसार
आरामदायक और उपयोगी बनाकर
सभी जीव जन्तुओं का जीवन
आसान और ख़ुशहाल कर देती है

इसलिये धरती माँ की आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही धरती माँ की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
धरती माता की
उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! धरती माता
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

अग्नि देव

बिना किसी धार्मिक भावना के
अग्नि देव की आराधना
मैं इसलिये करता हूँ कि
अग्नि देव हमें
बिना किसी भेदभाव के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी अमीरी ग़रीबी के
बिना किसी लोभ लालच के
ऊर्जा और उष्मा देते हो
बिना ऊर्जा और उष्मा के
किसी भी जीव जन्तु के
जीवन में गति नहीं होती है
जब जीवन में गति नहीं है तो
स्थिर जीवन मुर्दे के समान है

इसलिये अग्नि देव की आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ

और न ही अग्नि देव की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
अग्नि देव की
उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! अग्नि देव
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

जल और अन्न देव

बिना किसी धार्मिक भावना के
जल और अन्न देव की आराधना
मैं इसलिये करता हूँ कि
अन्न और जल देव
बिना किसी भेदभाव के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी अमीरी ग़रीबी के
बिना किसी लोभ लालच के
सम्पूर्ण संसार के
समस्त जीव जन्तुओं की

भूख प्यास को शान्त करते हो
वैसे भी बिना अन्न और जल के
जीवन मुश्क़िल ही नहीं असम्भव है

इसलिये अन्न और
जल देव की आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही अन्न
और जल देव की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
अन्न और जल की
उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! अन्न और जल देव
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

पेड़-पौधे

बिना किसी धार्मिक भावना के
पेड़-पौधों की आराधना

मैं इसलिये करता हूँ कि
पेड़-पौधे बिना किसी
धार्मिक भेदभाव के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी अमीरी ग़रीबी के
बिना किसी लोभ लालच के
सम्पूर्ण संसार के
समस्त जीव जन्तुओं को
ज़हरीली और प्रदूषित
गैसों और धातुओं के
विष का शोधन करके
छाया, हवा, फल, फूल,
लकड़ी, ख़ुश्बू, हरियाली,
सब्जी, औषधि, जड़ी बूटियाँ,
इत्यादि अनमोल संसाधन देते हो
ताकि सभी जीव जन्तुओं का जीवन
सुखी और निरोगी होकर
स्वस्थ और ख़ुशहाल हो जाये

इसलिये पेड़ और
पौधों की आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही पेड़ और पौधों की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
पेड़ और पौधों की
उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! पेड़ पौधों
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

मौसम

बिना किसी धार्मिक भावना के
मौसम की आराधना
मैं इसलिये करता हूँ कि
बिना किसी भेदभाव के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी अमीरी ग़रीबी के
बिना किसी लोभ लालच के
सम्पूर्ण जगत के
समस्त जीव जन्तुओं को
सर्दी, गर्मी, बरसात, सावन,
बसन्त और शरद ऋतु का
अहसास और आनन्द
प्रकृति में सन्तुलन बनाकर
सबको एक समान देते हो
ताकि समस्त जीव जन्तुओं का जीवन
ख़ुशहाल और आसान होकर
क़ुदरत हसीन और ख़ूबसूरत हो जाये

इसलिये मौसम की आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही मौसम की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
मौसम की उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! मौसम
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

ग्रह-नक्षत्र

बिना किसी धार्मिक भावना के
ग्रह नक्षत्रों की आराधना
मैं इसलिये करता हूँ कि
बिना किसी भेदभाव के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी अमीरी ग़रीबी के
बिना किसी लोभ लालच के
तुम ब्रह्माण्ड के नियमों का
उचित और सन्तुलित पालन करके

अपनी गति में सन्तुलन बनाकर
अपना निर्धारित काम मेहनत
और ईमानदारी से रोजाना करके
इस ब्रह्माण्ड को पंचतत्व से
सुरक्षित और सन्तुलित रखते हो
ताकि इस संसार के
समस्त जीव जन्तुओं का जीवन
आसान और सरल हो जाये

इसलिये ग्रह नक्षत्रों की
आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही ग्रह नक्षत्रों की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
ग्रह नक्षत्रों की उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! ग्रह नक्षत्रों
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

प्रकृति

बिना किसी धार्मिक भावना के
प्रकृति की आराधना
मैं इसलिये करता हूँ कि
बिना किसी भेदभाव के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी अमीरी ग़रीबी के
बिना किसी लोभ लालच के
सभी जीव जन्तुओं को एक समान
अपने संसाधन प्रदान करके
सन्तुलित और ख़ुशहाल रखती हो
ताकि इस संसार के
समस्त जीव जन्तुओं का जीवन
आसान और सरल हो जाये

इसलिये प्रकृति की आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही प्रकृति की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
प्रकृति की उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! प्रकृति
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के

तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ

वायु देव

बिना किसी धार्मिक भावना के
वायु देव की आराधना
मैं इसलिये करता हूँ कि
बिना किसी भेदभाव के
बिना किसी प्रतिफल के
बिना किसी अमीरी ग़रीबी के
बिना किसी लोभ लालच के
सभी जीव जन्तुओं को एक समान
प्राणदायनी वायु और शीलता प्रदान करके
समस्त जीव जन्तुओं को
ज़िन्दा और गतिमान रखते हो
ताकि इस संसार के
समस्त जीव जन्तुओं का जीवन
आसान और सरल हो जाये

इसलिये वायु देव की आराधना में
न तो मैं धर्म से आस्तिक हूँ
और न ही वायु देव की प्रार्थना में
आधुनिकता से नास्तिक हूँ
मैं तो यथार्थ के विचारों से
वायु देव की उपयोगिता के साथ
तन और मन से वास्तविक हूँ

इसलिये हे! वायु देव
प्राणी मात्र के लिये
तुम्हारी उपयोगिता से
मैं कृतज्ञ होकर
बिना किसी धार्मिक भावना के
तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ
और क़ुदरत में तुम्हारी
ख़ास अहमियत के लिये
दिलो दिमाग़ से अहसानमन्द हूँ।

परमार्थ

पतझड़ में
पेड़ों के पत्ते
परिपक्व होकर
पेड़ों से गिरकर
समय के साथ
ज़मीन में मिलकर
अपने पुरुषार्थ से
दूसरे पेड़ पौधों के
परमार्थ के लिये
उपजाऊ खाद बनकर
अपने पोषण से
पेड़ पौधों को
हरा भरा कर देते हैं

इसी प्रकार
हमारे बुजुर्ग
अनुभव से
परिपक्व होकर
अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
परिवार, समाज,
और देश के आर्थिक

और सामाजिक विकास में
अपने अनुभव के पौषण से
अमूल्य योगदान देकर
शजर की तरह
पुरुषार्थ और परमार्थ से
जन उपयोगी हो सकते हैं।

ईश्वर कहाँ रहता है

ईश्वर कहाँ रहता है
इन्सान की इन्सानियत में
इन्सानियत कहाँ रहती है
इन्सान के ईमान में
ईमान कहाँ रहता है
इन्सान के नैतिक चरित्र में
नैतिक चरित्र कहाँ रहता है
इन्सान के आचरण में
आचरण कहाँ रहता है
इन्सान के सद्कर्मों में
सदकर्म कहाँ रहते हैं
इन्सान के सद्विचारों में
सद्विचार कहाँ रहते हैं
इन्सान की सरलता में
सरलता कहाँ रहती है
इन्सान की सहजता में
सहजता कहाँ रहती है
इन्सान की सद्भावना में
सद्भावना कहाँ रहती है
इन्सान की आत्म सन्तुष्टि में
आत्म सन्तुष्टि कहाँ रहती है
इन्सान के परोपकार में

परोपकार कहाँ रहता है
इन्सान के पवित्र मन में
पवित्र मन कहाँ रहता है
इन्सान के निर्मल मस्तिष्क में
निर्मल मस्तिष्क कहाँ रहता है
इन्सान के अध्यात्म में
अध्यात्म कहाँ रहता है
इन्सान की मोहमाया से मुक्ति में
मोहमाया से मुक्ति कहाँ रहती है
इन्सान के मोक्ष में
मोक्ष कहाँ रहता है
ईश्वर की आराधना में
ईश्वर की आराधना कहाँ रहती है
दीन दुखियों की सेवा में
दीन दुखियों की सेवा कहाँ रहती है
इन्सान की इन्सानियत में
इसलिय यही परम सत्य है कि
ईश्वर कहाँ रहता है
इन्सान की इन्सानियत में।

विश्वास का असर

ग़लत आदमी
जब किसी कारणवश
समाज की नज़रों में
विशिष्ट व्यक्ति बन जाता है
तो बेचारे साधारण व्यक्ति की
यह मज़बूरी हो जाती है कि
वह किसी न किसी रूप में
ग़लत होने के बावजूद भी
वह सारी परेशानियाँ
तन मन से सहन करके भी
समाज के सामने
सही साबित होकर
न चाहते हुये भी
विशिष्ट व्यक्ति बनने की
मन से कोशिश करता है
जैसे जब चोर को ही
चौकीदार बना देते हैं
तब फिर चोरी कौन करेगा

वैसे ही जब राक्षस को भी
देवताओं की तरह पूजने
लग जायेंगे तो फिर

राक्षस भी इन्सानियत में
शर्मसार होकर के
शर्म से पानी पानी हो जायेगा
तो फिर राक्षस भी
ज़ुल्म और सितम करना
मन से बन्द कर देगा

इसी प्रकार
कोई भी बदमाश
जब पण्डित या
साधु के भेष में
रहने लग जाता है तो
समाज बदमाश से
वैसे ही नैतिक चरित्र के
आचरण की उम्मीद
करने लग जाता है
और बदमाश को भी
साधु समझने लग जाता है

इसलिये किसी का
अच्छा या बुरा होना
इस बात पर
निर्भर करता है कि
उसे किस नज़रिये से
देखा और समझा जाता है
और उस पर किस तरह से
विश्वास किया जाता है

अगर हम
बुरे व्यक्ति को भी
अच्छी नजर से देखकर
उस पर विश्वास करेंगे तो
हैवान और शैतान भी
इन्सानियत से शर्मसार होकर
अच्छा इन्सान बनने की
तन मन से कोशिश करेगा

वैसे ही अगर हम
अच्छे व्यक्ति को भी
बुरी नज़र से देखकर
वैसा ही अहसास करके
बुरा महसूस करेंगे तो
अच्छा इन्सान भी
एक न एक दिन तो
बुरा इन्सान बनकर
हैवान और शैतान
साबित हो ही जायेगा

वैसे ही
सफेद झूठ को भी
अगर सौ बार
सच कहा जाये तो
सफेद झूठ भी
सच हो जाता है।

ईश कृपा से कृतज्ञ

मेरे पास रोटी है तो
मुझे भूख भी तो लगती है
मेरे पास पानी है तो
मुझे प्यास भी तो लगती है
मेरे पास धन दौलत है तो
मेरे पास दान पुण्य भी तो है

मैं व्यस्त हूँ तब भी
मेरे पास समाज सेवा
करने के लिये वक़्त भी तो है
मैं अति विशिष्ट हूँ तब भी
मैं शिष्टाचार से शिष्ट भी तो हूँ
मेरे पास बिस्तर है तो
मुझे गहरी नींद भी तो आती है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मेरे पास अभाव है तब भी
मै सन्तुष्ट होकर
प्रसन्नचित भी तो हूँ
मेरे पास दर्द और ग़म हैं
तब भी मैं सुखी और ख़ुश हूँ
मेरे पास संर्घष है तब भी
मेरे पास जोश
और जुनून भी तो है
मेरे पास भविष्य की
अन्जानी अनिश्चितायें हैं
तब भी मेरे मन के पास
बहुत सारी आशायें
और उम्मीदें भी तो है

मेरे पास परेशानियाँ हैं
तब भी मेरे पास
निदान भी तो है
मेरे पास समस्यायें हैं
तब भी मेरे पास
समाधान भी तो है

मेरे पास हताशा व निराशा है
तब भी मेरे मन के पास
बहुत सारा उत्साह
और उमंग भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ

और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मेरे पास कर्तव्य है तो
तब भी मेरे पास
अधिकार भी तो है
मेरे पास कर्म भी है तो
मेरे पास ईमान धर्म भी तो है
मेरे पास चिन्तायें हैं तो
मेरे पास चिन्तन भी तो है

मेरे पास 'काव्य' है तो
मेरे पास करूणा भी तो है
मेरे पास दुख और दर्द के
ग़मगीन लम्हे हैं तो
मेरे तन और मन में
ख़ुशियों के पल भी तो हैं
मेरे पास तन्हाई है तो
मेरे पास सद्विचारों में
कथन का मंथन भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके

तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मेरे पास रंग
और गुलाल है तो
मेरे पास होली की
मस्ती भी तो है
मेरे बदन का रूप रंग
बदरंग काला है तो
मेरा दिल और दिमाग़
सत्यम् शिवम् सन्दरम् भी तो है

मेरे पास मंजिल है तो
मेरे पास मंजिल के
सफ़र का पता भी तो है
मेरे पास अज्ञानता का
अन्धकार भी है तो
मेरे पास उत्सुकता और
जिज्ञासा का चिराग़ भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर

ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मेरे पास आशीर्वाद है तो
मेरे पास चरण स्पर्श भी तो है
मेरे पास प्रार्थना है तो
मेरे पास दुआयें भी तो हैं
मेरा मन चन्दन है तो
मेरे तन का वन्दन भी तो है

मेरे पास माता पिता है तो
मेरे पास स्वर्ग ही तो है
मेरे पास परिवार है तो
मेरे पास दुख सुख में
अपनेपन का साथ भी तो है
मेरे पास सन्तान है तो
मेरे पास संस्कार भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मेरे पास बहनें हैं तो
मेरे पास रक्षा बन्धन के
विश्वास का त्यौहार भी तो है
मेरे पास सहयोग है तो
मेरे पास सहकारिता भी तो है
मेरे पास हर तरह के मौसम है तो
मैं हर मौसम का आनन्द लेता हूँ

मेरे पास ज़िम्मेदारियाँ हैं तो
मेरे पास मान सम्मान भी तो है
मेरे पास ममता और करूणा है तो
मेरे पास आदर सत्कार भी तो है
मेरे पास गिले शिक़वे हैं तो
मेरे पास अपनापन भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मेरे पास जायज़ खर्चे हैं तो
मेरे पास जायज़ कमाई भी तो है
मेरे पास रिश्तों का बन्धन है तो
मेरे पास रिश्तों के बन्धन में

विश्वास की आजादी भी तो है
मेरे पास मुसीबतें हैं तो
मेरे पास दोस्त भी तो हैं

मेरा तन मन्दिर है तो
मेरा मन ईश्वर भी तो है
मैं ईश्वर के प्रति
आस्तिक भी हूँ तो
मैं प्रकृति के प्रति
वास्तविक भी तो हूँ
मेरे पास सहायता है तो
मेरे पास सद्भावना भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मेरे पास प्यार है तो
मेरे पास चाहत
और क़शिश भी तो है
मेरे पास भावनायें हैं तो
मेरे पास कलम भी तो है

मेरे पास दिली जज़्बातों के
अहसास और संदेश हैं तो
मेरे पास संदेशों के लिये
पवन वेग से मेघदूत भी तो है

मेरे पास जीवन से
उचित मोह भी है तो
मेरे पास मृत्यु से
जीवन का मोक्ष भी तो है

मेरे पास मन के
विचारों का
जैसा आकार है
मेरे विचार वैसे ही
दिल और दिमाग़ से
पूर्ण साकार भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मेरे पास काम
और नाम है तो

मेरे पास आराम
और विश्राम भी तो है

मेरे पास बहुत सारी
असफलतायें हैं तो
मेरे पास कामयाबी के
बहुत सारे प्रयत्न भी तो है

मेरे तन और मन
अर्जुन की तरह से
भ्रमित और विचलित है तो
मेरे दिलो दिमाग़ में
गीता के कर्म योग के
सिद्धान्त का ज्ञान भी तो है
मेरे पास कला का ज्ञान है तो
मेरे पास विज्ञान की कला भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मैं दूसरों को
आईना दिखाता हूँ तो

मेरे पास ख़ुद को
देखने व परखने के लिये
मन का आईना
और गिरेबान भी तो है
मेरे तन और मन में
उचित स्वार्थ है तो
मेरे पास नि:स्वार्थ
परोपकार भी तो है

कोई भी पर्दे में है तो
मेरी आँखों में लाज
और शर्म भी तो है
मेरे पास प्रकृति की
सुन्दरता है तो
मेरे तन और मन में
प्रकृति का शृंगार भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ

मेरे पास उपदेश है तो
मेरे पास कर्म योग का

आचरण भी तो है
मेरे पास अमावस का
गहरा अन्धकार है तो
मेरे पास पूनम के चाँद की
शीतल रोशनी भी तो है

मेरे पास मीरा की
विरह वेदना है तो
मेरे पास कृष्ण का
मधुर मिलन भी तो है

इसलिये हे! ईश्वर
मैं तुम्हारी कृपा से कृतज्ञ हूँ
और शुक्रिया अदा करके
तुम्हारी इन रहमतों के लिये
दिल से अहसानमन्द होकर
ख़ुदग़र्ज़ मोहमाया के
इस नश्वर संसार का
सबसे ख़ुशकिस्मत इन्सान हूँ।